

---

# Shri Ramakrishna bhujangam

श्रीरामकृष्णभुजङ्गम्

## Document Information

---

Text title : Shri Ramakrishna bhujangam

File name : rAmakRRiShNabhujangam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmakRiShNa, bhujanga

Location : doc\_deities\_misc

Author : Kuttamattukunniyuru Kunjukishna Kurupa

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramALA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

Shri Ramakrishna bhujangam

---

श्रीरामकृष्णभुजङ्गम्

---



सदाकारमोडुार मन्त्रैकसारं  
सदानिर्विकारं विद्वानन्दपूरम् ।  
अशोरप्यणुं सर्वधीसाक्षिभूतं  
गुरुणां गुरुं भावये रामकृष्णम् ॥ १ ॥

युगेऽस्मिन् कलो सङ्ख्यत्सारतत्त्वं  
समुल्लासयन् लोकापन्नाकरं यः ।  
प्रभो ! कर्मसाक्षीव साक्षाद्भूव  
प्रभाप्रोज्ज्वलं तं भजे रामकृष्णम् ॥ २ ॥

भृशं कामिनीं काञ्चनं डिञ्चनाप्य-  
स्पृशन् सुप्तिकालेऽपि योऽभूदसङ्गः ।  
अतिश्चाध्यवैराग्य सौभाग्यमूर्तिं  
भवच्छेदिनं तं भजे रामकृष्णम् ॥ ३ ॥

जटां वङ्गं वैराग्यलक्ष्मीकयाभा-  
-मुरोलम्बितश्मश्रुमालां वलन्तम् ।  
लसद्-भ्रूयुगान्तः स्फुरद्भाव-दृष्टि-  
प्रमृष्ट प्रपञ्चं भजे रामकृष्णम् ॥ ४ ॥

यथान्तर्भङ्गिर्निकारस्वभाव-  
स्फुटाशंसदन्तद्युति धीतिवङ्गम् ।  
समस्तप्रकृत्यन्तिमस्थस्वलीला-  
समाकृष्टविश्वं भजे रामकृष्णम् ॥ ५ ॥

द्रुतस्वर्णसावर्ण्यं भृद्रम्यगात्रो-  
-पवीतीकृतस्वच्छं दिव्योत्तरीयम् ।  
महापीनवक्षो भुजाभारकिञ्चित्-  
-समाकुञ्चित्ताङ्गं भजे रामकृष्णम् ॥ ६ ॥

वसानं सुधाशुभ्रवस्त्रं सुगात्रं  
 स्फुरन्व्यारुपद्मासनस्थं पवित्रम् ।  
 विशालाङ्कुविन्धस्त विश्वैकरक्षा-  
 -विधानाञ्जलिं तं भजे रामकृष्णम् ॥ ७ ॥

“अहं सर्वसाक्षीमहाहंसयोगी” त्यडो  
 निर्विकल्पे समाधौ जगत्याम् ।  
 परं पामराणामपि व्यञ्जयन्तं  
 भ्रमं मार्जयन्तं भजे रामकृष्णम् ॥ ८ ॥

जगत् सृष्टिरक्षालयस्वैरलीला-  
 मलावीर्यमैश्वर्यसम्पत्समृद्धम् ।  
 भवतप्तभक्तावनैकप्रवीणं  
 पुराणं पुमांसं भजे रामकृष्णम् ॥ ९ ॥

पुरा येन तत्त्वं वसिष्ठाद्गृहीतं  
 पुनः पाण्डुपुत्राय योऽदात्तदेव ।  
 स रामश्च कृष्णश्च तत्तत्त्वमूर्त्या  
 गृहीत् साम्प्रतं रामकृष्णवतारम् ॥ १० ॥

पुरा रावणादीन् यथा येदिपादीन्  
 रुषा प्रावधीस्त्वं तथाऽस्मिन्योगेऽपि ।  
 महाभौढ्यरुढोद्भूताधर्मदार्ढ्य  
 समुत्पाट्य धर्मप्रतिष्ठां करोषि ॥ ११ ॥

जय श्रीपते ! सर्वलोकेश ! विष्णो,  
 जय क्षीरवाराशिशायिन् ! कृपालो ! ।  
 जय श्री वराहकृते ! श्री नृसिंह !  
 प्रभो ! भारतोद्धारका ! अहमूर्ते ॥ १२ ॥

विवेको-दितानन्दमन्दाकिनी यत्  
 पदाब्जोद्भववा सर्वलोकान् पुनाति ।  
 कुधीभिर्दुराणं कृपापूर्णां रुपं  
 तमीशं वितृष्णं भजे रामकृष्णम् ॥ १३ ॥

महाभक्तिसेव्यं महायोगभाष्यं

महाज्ञानगम्यं विद्यानन्दरम्यम् ।

अवर्ण्यं वरेण्यं भूषण्यं भूषण्यं

भजे रामकृष्णं भजे रामकृष्णम् ॥ १४ ॥

एति महाकविना कुट्टमत्तुकुन्नीयूरुकुञ्जकृष्णकुट्टप नामकेन विरचितं

“रामकृष्णभुजङ्गम्” सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

---

*Shri Ramakrishna bhujangam*

pdf was typeset on June 12, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

